साहित्य साधना

डॉ. देवीदास इंगळे गौरव ग्रन्थ

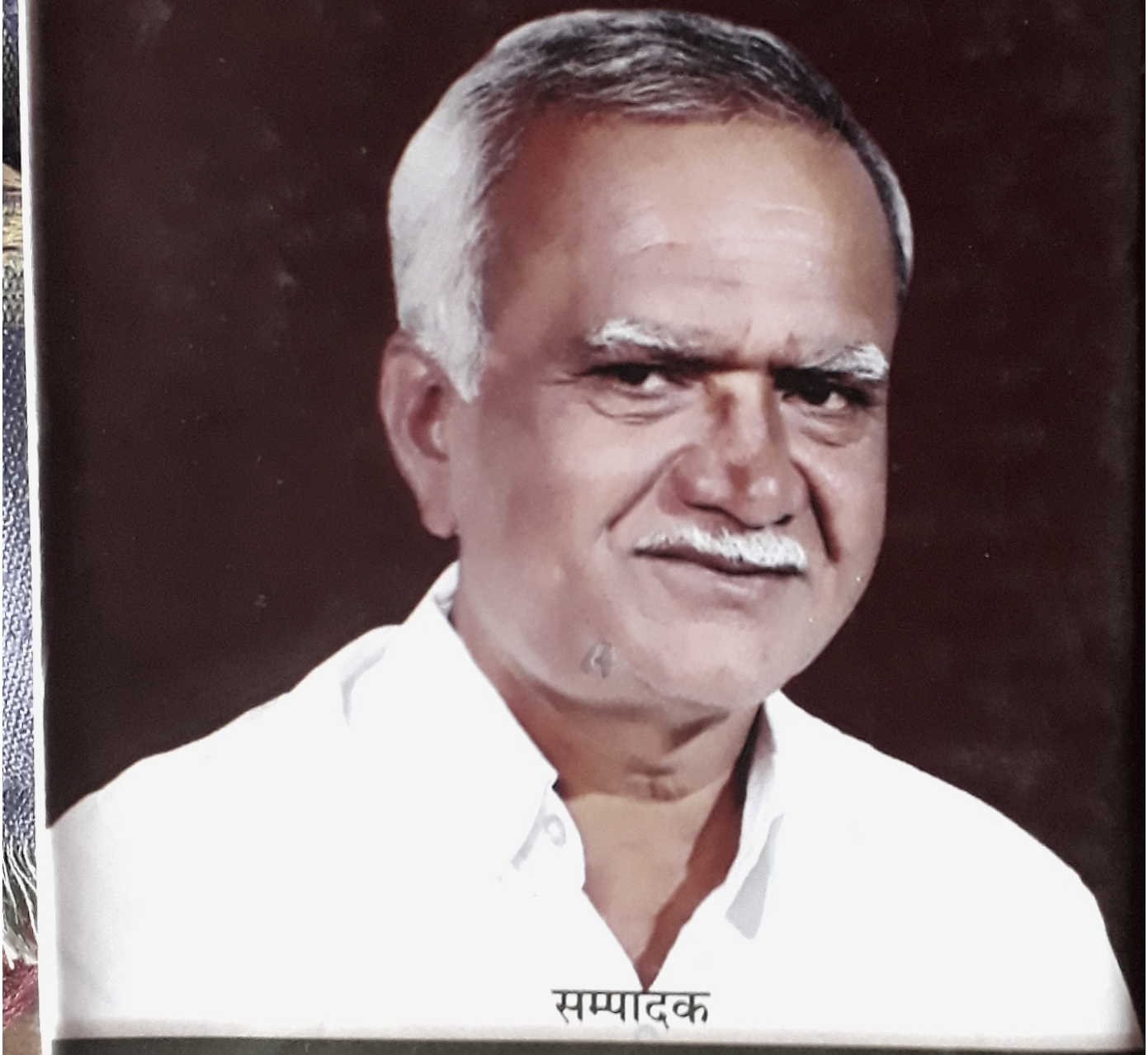

सम्पादक

डॉ. अशोक मर्डे

डॉ. विनोदकुमार वायचळ

28	हिन्दी बाल साहित्य और वैज्ञानिक चेतना *डॉ. पंडित बन्ने*	160–163
29	'अभंग–गाथा' नाटक की प्रासंगिकता *डॉ. मोहन डमरे*	164–168
30	देवनागरी लिपि का उद्‌भव और विकास *डॉ. राजकुमार जाधव*	169–172
31	डॉ. शंकर शेष की साहित्य यात्रा *डॉ. संजय जोशी*	173–176
32	लघुकथाओं में आधुनिक बोध *डॉ. महादेव कलशेट्टी*	177–180
33	डॉ. नरेन्द्र कोहली के व्यंग्य निबन्धों का सामाजिक पक्ष *डॉ. शिवकन्या निपाणीकर*	181–185
34	अधुनातन हिन्दी दलित महिला कहानी लेखन और दलित चेतना *डॉ. रमेश कांबळे*	186–189
35	21 वीं सदी में हिन्दी साहित्य शिक्षण की आवश्यकता *डॉ. केशव क्षीरसागर*	190–195
36	'सुअरदान' उपन्यास में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी के मानवतावादी विचार *डॉ. सुचिता गायकवाड़*	196–201
37	'अभंग–गाथा' नाटक में संत तुकाराम का विद्रोह *डॉ. राजू शेख*	202–203
38	'गिलीगडू' : महानगरीय बुजुर्गों की त्रासद गाथा *डॉ. सन्मुख मुच्छटे*	204–207
39	देवकीनंदन शुक्ल के उपन्यासों में भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण *डॉ. जी. बी. उषमवार*	208–210
40	जयशंकर प्रसाद के कहानी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना *प्रा. सिद्धराम पाटील*	211–214
41	नागार्जुन की कविताओं में राजनीतिक व्यंग्य *प्रा. नवनाथ जगताप*	215–218
42	दक्षिण भारत की भाषाओं की संपर्क लिपि के रूप में देवनागरी लिपि *डॉ. दत्ता साकोळे*	219–222

डॉ. शंकर शेष की साहित्य यात्रा

डॉ. संजय व्यंकटराव जोशी .

बालक की संस्कार भूमि परिवार है। यहीं से वह जीवन तथा समाज की ओर देखने की दृष्टि ग्रहण करता है "डॉ. शंकर शेष को भी रचना दृष्टि विरासत में ही मिल गई थी प्राथमिक शिक्षा अवस्था में ही साहित्य में अभिरूचि दिखाने का इन्होंने आरंभ किया था। संगीत, नाटक की चर्चा, घर का सुसंस्कृत वातावरण आदि के कारण कविता की उम्र में आते ही उन्होने तुकबंदी आरंभ कर दी कभी–कभार कहानी से भी हात आज़मा लेने लगे। दिनोंदिन इनका रूझान साहित्य की और बढता गया, उच्चशिक्षा के लिए नागपूर में 'मॉरिस कॉलेज' में दाखिल हुए इन दिनों इनकी छुटपुट रचनाओं विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थी इनका लेखकीय आत्मबल बढ़ने लगा पद्य की ओर से मुँह फेर गद्य की रचनाएँ आरंभ की इसी समय 'डॉ. विनय मोहन शर्मा' जैसे गुरू का मार्गदर्शन मिला और लेखन को नये आयाम प्राप्त हुए। "

'डॉ. शेष' के साहित्य विकासक्रम में कविता, कहानी आदि का पत्र–पत्रिकाओं मे लेखन तथा आकाशवाणी के सम्पर्क के कारण उनके अनेक दोस्त एवं अध्यापक उन्हें देखने लगे उनके लिखे रेडियो रूपक चर्चा का विषय बन गये थे। उनके सहपाठियों ने उन्हें लेखक की संज्ञा अभिहित किया। लेखक के साथ नाटककार लिखवा देने का सारा श्रेय भी इसी कॉलेज को जाता है।

'डॉ. शंकर शेष' के हर नाटक की विशेषता अलग रही है, जिसका विश्लेषण करना जरूरी लगता है। 'मुर्तिकार' नाटक से लेकर 'आधी रात के बाद' तक साथ ही अन्य विधाओं का भी विशेष रूप में जिक्र किया जाता है। उनका आरंभिक दिनों का नाटक 'मुर्तिकार' (1955) उनका पहला नाटक है। महाविद्यालय के गैदरिंग में खेला गया और काफी सफल हुआ। मुर्तिकार से शुरू हुई उनकी यह नाट्य यात्रा निरंतर गतिशील होती चली गयी। इसी नाटक को 'श्रीनगर' में संपन्न एक नाटक प्रतियोगिता में सफलता से खेला गया। प्रतियोगिता में प्रस्तुत इस नाटक ने प्रथम स्थान प्राप्त किया था और इनके नाटकों का सिलसिला जारी हो गया, प्रेरणा गतिशील होती गयी, कलम को गति मिली और एक के बाद एक सुंदर नाटकों का सृजन होने लगा। 'मुर्तिकार' नाटक में स्त्री–पुरूष के बीच संघर्ष और तनाव का चित्रण है। दूसरे स्तर पर पारिवारिक समस्या की

कथा है, इसमें लेखक स्पष्ट करते है, कि भारतवर्ष के लोग कलाकार तथा साहित्यकार को भूखा मारते हैं और बाद में उनका पुतला बनवाने के लिए हजारों रूपये चंदा जमा करवाते हैं। यही भारतवर्ष के साहित्यकार और कलाकार की पीड़ा है। यही इस नाटक में उभरकर आया है। यह शेष का नाटक नागपूर मेडिकल महाविद्यालय के विद्यार्थियों की माँग पर लिखे 'मुर्तिकार' एकांकी नाटक का रूपांतर ही तीन अंकी 'मुर्तिकार' नाटक है। 'आर्य बुक डेपो दिल्ली' ने इसका प्रकाशन किया है। इसकी पृष्ठ संख्या 112 है। यह 'डॉ. शेष' की मौलिक रचना है। 'डॉ. शेष' की दूसरी रचना 'रत्नगर्भा' है इसका रचनाकाल 1956 है। इसमें शेष ने प्रेम में मन की अपेक्षा तन को माननेवाले लोगों का चित्रण किया।

'नई सभ्यता नये नमूने' यह नाट्य रचना भी सन 1956 की है। इसमें लेखक ने मिथक पद्धति का प्रयोग किया है। उन्होंने समकालीन समाजव्यवस्था और चारित्रिक पतन की समस्या को पेश किया है। 'बेटोंवाला बाप' इस नाट्यकृति का सृजन सन 1958 में किया गया इस नाटक की पांडुलिपि खो जाने के कारण इसका प्रकाशन नहीं हो पाया। 'तिल का ताड' यह नाटक इनका सन 1958 का है। नाटककार ने इसमें हस्य व्यंगात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'बिन बाती के दीप' यह इनकी नाट्यकृति 1968 की है। इसमें अधिक महत्वकांक्षा रखनेवाले आदमी के अधःपतन को चित्रित किया है। 'बाढ़ का पानी' इस नाट्यकृति का रचनाकाल 1968 का है। इस नाट्यकृति पर मध्यप्रदेश सरकार का 'सात हजार' रूपये का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। इसमें गांधीवादी दर्शन को व्यक्त किया गया है। 'बंधन अपने अपने' इसकी रचना 1969 में हुई। शिक्षा व्यवस्था में निहित भ्रष्टाचार को लेकर इसकी रचना की गई है।

'खजुराहों का शिल्पी' डॉ. शंकर शेष की यह रचना बहुत ही ख्याति प्राप्त है। इसका रचनाकाल 1970 का है। नाटककार ने इसमें प्राचीनकाल से संसार में होनेवाले माया और मोक्ष के संघर्ष को नये ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की है। 'फंदी' इस नाटक का रचनाकाल 1971 का है। यह नाटक के भीतर नाटक का कलात्मक अविष्कार है। 'एक और द्रोणाचार्य' इस नाट्यकृति की रचना शेष ने 1971 में की है। महाभारत के संदर्भ को आधुनिकता के साथ जोडने का प्रयास किया है। 'कालजयी' इस नाट्यकृति का रचनाकाल 1973 का है लेखक ने इसमें जनता द्वारा परिवर्तन दिखाकर शक्ति को श्रेष्ठ ठहराया है। 'कालजयी' नाटक (मराठी) रचना है। इसका रचना काल 1973 का है। मराठी भाषा में यह लिखा यह हिन्दी का ही रूप है। 'घरौंदा' इस नाटक का रचनाकाल 1974 का है। इस नाटकपर फिल्म भी बनी और इस फिल्म पर 'आशीर्वाद' पुरस्कार भी मिला है। मुंबई शहर की घर की समस्या इस नाटक में चित्रित है। 'अरे मायावी सरोवर' इसका रचनाकाल 1974 का है। इसमें स्त्री को सीमित करने की पुरूष की साजिश का यथार्थ है। मौलिकता शेष में ऐसा भी की थी "गोविन्द निहलानी की फिल्म 'आक्रोश' के कुछ दृश्य जो सत्यदेव दुबे से नहीं लिखे जा रहे थे शंकर शेष की जादुई कलम से ही निकले थे।"

'रक्तबीज' इस नाट्यकृति का रचनाकाल 1976 का है। महानगरों में रहनेवाले उच्चमध्यवर्ग के लोगों की मनोवृत्ति का चित्रण इसमें है। 'राक्षस' सन 1977 में लिखी यह रचना है। महाभारत के 'बकासूर राक्षस' के मिथक से संबंधित है। साथ ही मनुष्य के संघर्ष को भी इसमें बताया है। 'पोस्टर' इस नाट्यकृति का रचनाकाल सन 1977 का है। भूमिहीन किसानों की तडप इस नाटक का प्रमुख स्वर है। शोषण के शिकार लोगों का वर्णन इसमें किया गया है। 'चेहरे' इस नाटक का रचनाकाल 1978 है इसमें सामाजिक विसंगतियों का चित्रण लेखक ने किया है। 'आधी रात के बात' डॉ. शंकर शेष यह अंतिम नाट्यकृति है। इसका रचनाकाल 1981 है। इस नाटक के माध्यम सें नाटककार ने समाज में रहनेवाले प्रतिष्ठित लोगों की क्रूर प्रवृत्ति का पर्दाफ़ाश किया है।

उपर्युक्त नाट्यकृति के अलावा 'डॉ. शंकर शेष' ने एकांकी नाटकों का भी सृजन किया है। इनमें 'विवाह मंडप', इसका रचना काल सन 1957 का है। यह उनकी अप्रकाशित रचना है। 'हिन्दी का भूत' इसका रचना काल 1958 का है। यह रचना भी उनकी उपलब्ध नहीं है। बाद में 'डॉ. विनय' के द्वारा प्रकाशित हुई। 'त्रिभूज का चौथा कोण' डॉ. शंकर शेष ने यह रचना सन 1971 में की है यह भी रचना अप्राप्य है। 'एक प्याला कॉफी' (अंग्रेजी प्ले) इसका रचनाकाल सन 1979 है । इसमें शेष ने अमीर परिवारों की कृत्रिम जिंदगी को उभारने की कोशिश की है। 'पुलिया' एकांकी में सरकारी दफ्तरों में होनेवाले भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है। इसकी रचना सन 1981 में ही हुई है। 'सोपकेस' (अफसरनामा) इसकी रचना सन 1981 में हुई है। 'प्रतीक्षा' एकांकी में मकान खोजने का नाटक करके आपने लड़के की दस साल पूर्व हुई हत्या की खोज की जाती है।

एकांकी नाटकों के साथ ही 'डॉ. शंकर शेष' ने कुछ बाल नाटकों का लेखन भी किया है। इसमें 'दर्द का इलाज' इस बाल नाटक की रचना सन 1973 में हुई बाल प्रवृत्ति को स्पष्ट करने की चेष्टा इस नाटक में की है। दूसरा बाल नाटक 'मिठाई की चोरी' है। इसका रचनाकाल सन 1973 का है। यह बाल नाटक अप्राप्य है अनुदित साहित्य का लेखक कार्य भी 'डॉ. शंकर शेष' ने किया है। कुछ नाटकों का अनुवाद किया है। 'दूर के दीप' मराठी के प्रसिद्ध सहित्यकार तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता 'श्री. वि. वा. शिरवाडकर' का मूल नाटक 'दुरचे दिवे' का यह हिन्दी अनुवाद है। यह 1959 में किया 'गार्बो' मराठी लेखक श्री. महेश एलकुंचवार लिखित गावों नाटक का अनुवाद 'एग और गार्बो' नाम से किया है। यह कार्य सन 1972 में डॉ. शंकर शेष ने किया 'चल मेरे कद्दू टुम्मक टुम्मक' यह 'अच्युत वझे' का मुल मराठी नाटक 'चल रे भोपळ्या टूणूक टूणूक' का हिन्दी अनुवाद है। इसका अनुवाद सन 1973 में किया गया 'पंचतंत्र' यह मूल मराठी लेख 'श्री. माधव साखरदांडे' की रचना पंचतंत्र का छायानुवाद है। जिसे 'डॉ. शंकर शेष' ने अपनी मृत्यू के कुछ दिन पहले पूर्ण किया। 'डॉ. शंकर शेष' की साहित्यक यात्रा में उन्होंने पटकथा का लेखन कार्य भी किया 'घरोंदा', 'घुटन', 'दुरियाँ', 'सुगंध' आदि। शंकर शेष की अनेक पटकथायें अधूरी हैं, जिन्हें कोइ पूरा नहीं कर सका। उन्हीं रचनाओं को पूरा किया जिनका कम

से कम नब्बे प्रतिशत लेखन कार्य हो चुका था। पटकथा संवाद में 'सोलहवाँ सावन' डॉ. शेष ने लिखा है।

'डॉ. शंकर शेष' का उपन्यास साहित्य में भी योगदान रहा है। 'डॉ. शेष' नाटक का सृजन करते थे। यदि नाटक में कुछ कमी महसुस हुई तो उस नाटक को वे उपन्यास में परिवर्तित करते थे। उन्होंने केवल चार उपन्यासों का लेखन किया है। जिसमें 'तेंदु के पत्ते', 'चेतन' सन 1971 'खजुराहों की अल्का', 'धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे' है सन 1980 इसमें 'तेंदु के पत्ते' रचना है। 'बंधन अपने अपने' की कथा का विस्तारित रूप देकर उन्होंने 'चेतना' नामक उपन्यास लिखा (सन 1980) और 'खजुराहों का शिल्पी' नाटक का रूपांतर 'खजुराहों की अल्का' नाम से किया है। इसमें माया और मोक्ष के संघर्ष का चित्रण विस्तार से किया गया है। इस उपन्यास के संदर्भ में कहा जा सकता है, की यही केवल 'शंकर शेष' का उपन्यास ऐसा है जिसको शंकर शेष को सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकारों की पंक्ति में खड़ा करता है। उनका बचपन से ही रामायण–महाभारत के प्रति आकर्षण था। इसी आकर्षण की उपज उनका उपन्यास 'धर्मक्षेत्र कुरूक्षेत्र' है। महाभारत कालीन संपूर्ण व्यवस्था पर कड़ा व्यंग्य किया है।

'डॉ. शंकर शेष' के अन्य सृजन में 'हिन्दी और मराठी कहानी का तुलनात्मक अध्ययन' सन 1961 इसको नागपूर विश्वविद्यालय ने स्वीकृत किया और उन्हे पी–एच. डी. की उपाधि से सन्मानित किया इस शोध प्रबंध में पाँच अध्याय हैं। दूसरा शोध 'छत्तीसगढी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन (1965) इस शोध प्रबंध में उनके तीन अध्याय है। यह सन 1965 का लिखा है। इन्होंने एक संस्मरण का लेखन भी किया है, जो 'चेहरे' नाम से है।

समीक्षात्मक लेख के अंतर्गत 'अँधेरी नगरी एक दृष्टिकोण', 'सुरदास के काव्य में संयोग श्रृंगार', 'सूरदास के काव्य में वियोग', 'सुरदास के काव्य का कलापक्ष', 'विद्यापति के काव्य में राधा', 'विद्यापति के कृष्ण गीतिकाव्य परम्परा और विद्यापती का सौंदर्याकन' आदि समीक्षात्मक लेखों का समावेश है। संकीर्ण रचना विधा में 'समृद्धि की ओर' उनका है इसमें 'जे. आर. डी. टाटा' की जीवनी का अनुवाद जिसके लेखक आर. एम. लाला है।

इस तरह से 'डॉ. शंकर शेष' का लेखकीय कार्य आरंभ होता गया और उन्होंने विभिन्न रचनाओं का सृजन किया। उनकी ख्याति एक नाटककार के रूप में अधिक रही। जब कि उन्होंने उपन्यास एकांकी, आलोचना, पटकथा जैसी विधाओं का सृजन किया है।

संदर्भ सूची :–

1. शंकर शेष के नाटकों में शेष–विशेष – डॉ. भुक्तरे बळीराम संभाजी, पृ. क्र. 15
2. धर्मयुग 15 से 21 नवम्बर 1981.
3. शंकर शेष के चेहरे नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन – प्रा. शोभा नाईक, पृ. क्र. 71